कविवर पंडित संतलालजी कृत

पंचम पूजा

128 गुण
सहित

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

: मधुर स्वर :

पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

ऊरध अधो सु रेफ सबिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर।।
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाग को।
है केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्... अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्। ..
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।...
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्मरहित निरोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चाल – बारहमासा छन्द)

चन्द्रवर्ण लखि चन्द्रकांतमणि, मनतें श्रवै हुलसधारा हो।
कंज सुवासित प्रासुक जलसों, पूजूँ अंतर अनुसार हो।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचरण उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरण, सुमिरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा-रोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगण मणिधर जास वास लहि, मद तजि गंध लुभावत हैं।
सो चंदन नंदनवन भूषण, तुम पदकमल चढ़ावत हैं।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक ही के भ्रम भ्रमरावलि, भ्रमत चकित चकराज भए।
शशि मण्डल जानो सो अक्षत, पुंजधार पद कंज नये।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मदन वदन दुतिहरन वरन रति, लोचन अलिगण छाय रहे।
पुष्पमाल वासित विशाल सो, भेंट धरत उर काम दहे।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशतगुण-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चितवत मन, वरणत रसना, रस स्वाद लेत ही तृप्त थये।
जन्मांतर हु की क्षुधा निवारै, सो नेवज तुम भेंट धरे।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशतगुण-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवमणिप्रभा अनूपम सुर निज, शीश धरण की रास करै।
या बिन तुच्छ विभव निज जानें, सो दीपक तुम भेंट धरै।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

नीलांजना सुरी नभ में ज्यों, ऋषभ-भक्ति कर नृत्य कियो।
सो तुम सन्मुख धूप उड़ावत, तिस छवि को नहीं भाव लियो।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

सेव रंगीले अनार रसीले, केला की ले डाल फली।
डाली हू नृपमाली हूँ, नातर प्रासुकता की रीति भली॥
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उर धारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमरत ही भवपारा हो॥

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय-श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

एक से एक अधिक सोहत वसु-जाति अर्घ करि चरण नमूँ।
आनंद आरति आरत तजिकै, परमारथ हित कुमति वमूँ।।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उरधारा हो।
चौंसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरन, सुमिरत ही भवपारा हो।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध-समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले।।
ते क्रमावर्त नसाय युगपत, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप हैं।।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय, चहुँ गुण गेह, द्यो हम शुभमती।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशत्यधिकशतगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

शिवगुण सरधा धार उर, भक्ति भाव है सार।
केवल निज आनन्द करि, करूँ सुजस उच्चार।।

पद्धरी

जय मदन कदन मन करण नाश, जय शांतिरूप निज सुख विलास।
जय कपट सुभट पट करन सूर, जय लोभ क्षोभ मद दम्भ चूर।।
पर-परिणति सों अत्यन्त भिन्न, निज परिणति सों अति ही अभिन्न।
अत्यन्त विमल सब ही विशेष, मल लेश शोध राखो न शेष।।

मणि दीप सार निर्विघन ज्योत, स्वाभाविक नित्य उद्योत होत।
त्रैलोक्य शिखर राजत अखण्ड, सम्पूरण द्युति प्रगटी प्रचण्ड।।
मुनि-मन-मन्दिर कौ अन्धकार, तिस ही प्रकाश सौं नशत सार।
सो सुलभ रूप पावै न अर्थ, जिस कारण भव-भव भ्रमे व्यर्थ।।
जो कल्प-काल में होत सिद्ध, तुम छिन ध्यावत लहिये प्रसिद्ध।
भवि पतितन को उद्धार हेत, हस्तावलम्ब तुम नाम देत।।
तुम गुण सुमिरण सागर अथाह, गणधर सरीख नहिं पार पाह।
जो भवदधि पार अभव्य रास, पावे न वृथा उद्यम प्रयास।।

जिन-मुख द्रह सों निकसी अभंग, अति वेग रूप सिद्धान्त गंग।
नय-सप्त भंग कल्लोल मान, तिहुँ लोक वही धारा प्रमान।।
सो द्वादशांग वाणी विशाल, ता सुनत पढ़त आनन्द रसाल।
यातें जग में तीरथ सुधाम, कहिलायो है सत्यार्थ नाम।।
सो तुम ही सों है शोभनीक, नातर जल सम जु वहै सु ठीक।
निज पर आतमहित आत्म-भूत, जब से है जब उतपत्ति सूत।।
ज्यों महाशीत ही हिम प्रवाह, है मेटन समरथ अमनि दाह।
त्यों आप महा मंगलस्वरूप, पर विघन विनाशन सहज रूप।।

है 'सन्त' दीन तुम भक्ति लीन, सो निश्चय पावै पद प्रवीण।
तातैं मन-वच-तन भाव धार, तुम सिद्धन कूँ मम नमस्कार।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशत्यधिकशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो
नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जो तुम ध्यावें भावसों, ते पावें निज भाव।
अगनि पाक संयोग करि, शुद्ध सुवर्ण उपाव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।